Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

गद्यकार महादेवी वर्मा और उनका साहित्य

डॉ. बिक्कड अभिमन्यु सदाशिव
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला वाणिज्य
व विज्ञान महाविद्यालय जालना.
मो. नं. 9421307706

महादेवी वर्मा सर्वप्रथम हिन्दी की एक श्रेष्ठ कवयित्री है। छायावादी काव्य धारा के प्रमुख चार कवि प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा एक आधास्तंभ है। इनमें महादेवी वर्मा का विशेष स्थान है। इस संदर्भ में डॉ. इंद्रनाथ मदान लिखते हैं – "आधुनिक कवियों में श्रीमती महादेवी वर्मा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह इसलिए नहीं कि वे एक स्त्री हैं, वरन उनके कंठ से विशुध्द अनुभूतिमय होकर फूटा है और उनकी कल्पना अनुभूति से ऐसी घुल–मिल गई है, यह धोखा है कि वह अनुभूति है या कल्पना असंभ नहीं। ऱ्हदय की सूक्ष्मत्य भावनाओं को जितनी सफलता के साथ महादेवीजी ने व्यक्त किया है, उतनी सफलता के साथ अन्य कोई कवि शायद ही कर सका हो। उनके काव्य में कला तंत्र विकास न होकर ऱ्हदय की सचाई की झलक है।"

वर्मा ने अपने साहित्य में जन सामन्य के दुःख–दर्द, पीडा वेदना, या तनाओं को सुक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। अपने करुणामय व्यक्तित्व के कारण ही उनका साहित्य गौतम बुध्द के करुणा अहिंसा और शांति से प्रभावित दिखाई देता है। गरिबों की दशा देखकर वह व्याकुल हो उठती है। इतना ही नहीं तो इनका पशु, पक्षी, फूल–पत्तियों से लगाव सैदव बना रहा है। महादेवी जी को करुणा के कारण कुछ विद्वानों ने उनको आधुनिक मीरा भी कहा है। लेकिन कुछ विद्वान इसे सहमत नहीं है। वह एक साहित्य में ऊँचा स्थान पानेवाली कवयित्री हैं। इसी कारण से उन्हें गद्य लेखिका के रुप में कम जानते हैं। परंतु यह कवयित्री के साथ एक श्रेष्ठ गद्य लेखिका भी है।

महादेवी वर्माजी के कविता में व्यक्ति वादी है तथा गद्य में उनकी दृष्टि समष्टि पर केंद्रित हुई है।साहित्य मूलतः निर्माण है – व्यष्टि के लिए भी और समाष्टि

के लिए भी। उनका साहित्य उनके जीवन का यथार्थ है जहॉ लेखिकाने अनेक प्रसंगों को देखा, जिया और संघर्ष किया। स्वयं लेखिका अपने स्मृतिचित्रों के संबंध में लिखती है – "इन स्मृतिचित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वाभाविक भी था।" तू उनके पिता गोविंद प्रसाद हेडमास्टर माता हेमरानी देवी शिक्षित थी। यह उनके लिए एक मात्र संतान थी। महादेवीजी का जन्म 1907 में फरुखाबाद में हुआ। इनका बचपन इंदौर में बिता। उनका विवाह 9 वर्ष की थी तब नारायण शर्माजी के साथ हुआ परंतु वह संबंध ठीक नहीं पाया।

महादेवीजी का व्यक्तित्व ऐसा था कि उन्हें मिलने आया प्रत्येक व्यक्ति प्रभवित होता था। लेखिका भी उनका अतिश्य उतना ही साहित्यकारों के लिए एक याद बन जाता था। लेखिका ने इंदौर छोडने के बाद प्रयाग में स्थिर हुई। निर्धन और गरिबों के लिए हमेशा मदत करती थी। गरिबों के दु:ख दर्द से व्याकुल हो जाती थी। गद्य में विशेषतः रेखा चित्र और संस्मरण विद्या में दु:खी पीडित, शोषित, दमित, उपेक्षित, आदि हीन–दीनों का यथार्थ चित्रण है। समाज में नारी की अवहेलना, प्रताडना से लेखिका का मन द्रवित होता है, विद्रोह की आग उनके ऱ्हदय में भडक उठती है और वह अन्याय, अत्याचार, जुल्म के खिलाफ आवाज उठाती है।

उनके केवल प्रसिध्द रेखाचित्र तथा संस्मरण के अतिरिक्त अतीत के चलाचित्र, और स्मृति की रेखाएँ उल्लेखनीय है। इसमें निम्न वर्ग के लोगों का वर्णन है। रामा बिंदा सबिदा, घीसा, बदलू, राधिया, लछमा, भक्तिमन, केरीवाला, विधवा भाभी, आदि पात्र है। प्रत्येक चरित्र का करुण अंत लेखिका के जीवन में वेदना की एक टीस छोड जाता है।

सबिया के माध्यम से लेखिकाने उच्चभ्रु समाज के लोगों से भयभीत उस नारी की व्यथा को उद्घटित किया है। वह ईमानदारी से जीवन जीना चाहती है। परंतु समाज का सधन वर्ग गरिबों के साथ ऐसा सलुक करता है, सबिया जैसे वर्ग के लोगों को जीना मुश्किल हो जाता है। समाज के इस क्रुरता के प्रति कठोर आघात करते हुए लेखिका लिखती है – "इस भारतीय पुरुष जैसे अपने मनोरंजन लिए रंग बिरंगे पक्षी पाल लेता है, उपयोग के लिए गाय, घोडा पाल लेता है, उसी प्रकार यह एक स्त्री को भी पालता है, हमारे समाज के पुरुष के विवेकहीन जीवन का सजीव चित्र देखना हो तो विवाह के समय गुलाब सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पॉच वर्ष बाद देखिए उस

समय प्रौढ़ दुर्बल संतानों की रोगिणी पीली माता में कौन सी विवशता कौन सी रुला देनेवाली करुणा न मिले।"

लेखिका पर भारतीय संस्कृति का गाढ़ा प्रभाव दिखाई देता है। एक ओर पुरुष प्रधान संस्कृति से शोषित नारी का चित्रन करती है। तो दूसरी ओर पुरुष के प्रति उदार, एक निष्ठ एवं सहृदयशिल नारी का भी चित्र करती है। 'राधिया' एक ऐसा ही पात्र है जो अपने गरीब पति के साथ अभाव की जिंदगी बडी प्रसन्नता के साथ जीती है। घीसा एक गरीब देहाती बालक है। बचपन में पिता का साथ उठ जाने से अपने मॉ के साथ मजदूरी पर जाता है। जाने के लिए मोटी रौटी, नमक और डली गुड, तन ढकने के लिए फटे कपडे है। लेखिका ने देहाती का यथार्थ चित्रण किया है।

महादेवीजी ने अपने गद्य साहित्य में समाज के उपेक्षित, दीन हीन गरीब वर्ग के पात्रों का उनके दु:ख, दर्द, पीडा, निराशा, कुंठा, शोषण, दमन, अकेलापन के साथ उनके संघर्षमय जीवन का चित्रण किया है। प्रत्येक पात्र उनके पास चलकर आया है या निकट रहा है। प्रत्येक पात्र के प्रति लेखिका के प्रति करुणा दिखई देती है। विद्रोह का स्वर उनके कई चरित्रों में दिखाई देती है – वह इस प्रकार से –

"बर्बरा तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब ले लिया, पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार न देंगी, तो इनकी समस्याएँ तुरंत सुलझ जावे। जो समाज इन्हें वीरता, साहस और त्याग भरे मातृत्व के साथ नहीं स्वीकार कर सकता क्या वह इनकी कायरता और दैन्यभरी मूर्ति को ऊँचे सिंघासन पर प्रतिष्ठित कर पूजेगा? युगों से पुरुष स्त्री को उसकी भक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है।

उपसंहार के रुप में हम कह सकते है कि महादेवी जी के संस्मरण, रेखाचित्र भारतीय समाज में नारी जाति के शोषण उसकी अवहेलना, अत्याचार, निम्न वर्ग के साधारण लोगों के प्रति लेखिका की सहानुभूति करुणा, प्रेम, ममत्व एवं स्नेह का जीता–जागता प्रतीक है। जो आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ

1) छायावादी कवि : पृ. 172, 173.
2) अतित के चलचित्र अपनी बाप – पृ. 2
3) मेरे प्रिय संभषण – महादेवी वर्मा
4) अतिक के चलचित्र – महादेवी वर्मा – पृ. 65–66.